अखिल सेतु

प्रधान संपादक - डॉ. अखिल बंसल

दिनांक 1 जनवरी से 31 मार्च 2024 : पृष्ठ – 40

(त्रैमासिक E-पत्रिका)

आचार्य श्री विद्यासागर जी
विशेष

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

दिशावाहक

न्यायमूर्ति जस्टिस एन. के. जैन – जयपुर

पद्मश्री डॉ. विश्व मोहन भट्ट – जयपुर

पद्मश्री डॉ. कैलाश मडवैया –भोपाल

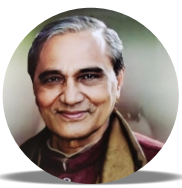

साहित्यकार नंद भारद्वाज

साहित्यकार लोकेश सिंह साहिल

वरिष्ठ पत्रकार मिलापचंद डंडिया

साहित्यकार कृष्ण कल्पित

जीवन में सफलता के लिए शिक्षा की
जरूरत होती है, डिग्री की नहीं |

- प्रेमचंद

वर्ष - 1 पठनीय-मननीय-संग्रहणीय ई-पत्रिका अंक - 1

प्रधान संपादक - डॉ. अखिल बंसल

संरक्षक
श्रीमती निर्मला जैन, इंदौर

मार्गदर्शक
डॉ. एन. के. खींचा, जयपुर
किशनलाल जांगिड, जोधपुर
डॉ. शान्तिकुमार पाटिल, जयपुर
श्री राजेश पाठक प्रवीण, जबलपुर
श्रीमती स्वाति `सरू` जैसलमेरिया, जोधपुर

एग्जीक्यूटिव बोर्ड
श्रीमती पदमा तिवारी, दमोह
श्रीमती प्रभा जैन, इंदौर
डॉ. रीना सिह्ना `अनामिका`, मुम्बई
श्रीमती दीप्ति खरे, मण्डला
श्रीमती सीमा गर्ग `मंजरी`, मेरठ

संपादक
वेदप्रकाश सिंह `प्रकाश`
डॉ. सुरेन्द्र भारती
गोपाल प्रभाकर

सह संपादक
ज्ञानेन्द्र पाण्डेय `अवधि मधुरस`

साहित्य संपादक
सीमा गर्ग, `मंजरी`
ऋतु अग्रवाल

प्रबंध संपादक
शोभा टंडन

साज–सज्जा
DADA ART
Jaipur

प्रकाशक
श्रीमती शैल बंसल
समन्वय वाणी फाउंडेशन,जयपुर

प्रकाशन स्थल
129 जादौन नगर–बी, स्टेशन रोड
दुर्गापुरा, जयपुर – 302018
Email - athaisamvad@gmail.com
9929655786

आस्था से कही बात और आस्था से किया काम
दूसरों तक न पहुंचे, ये हो नहीं सकता।
- मनु भंडारी

अखिल सेतु की विशेषताएँ

जहाँ-जहाँ भी ऐसे चिह्न दिए गए है
वहाँ क्लिक करने से आप उन लिंकों को खोल पाएँगे।

वीडियो

इस तरह के चिह्न को
क्लिक करने से
आप वीडियो खोल पाएँगे

व्हाट्स एप

इस तरह के चिह्न को
क्लिक करने से
आप हमारे व्हाट्स एप पर
सीधे जुड़ सकेंगे

आडियो

इस तरह के चिह्न को
क्लिक करने से
आप ऑडियो रिकॉर्डिंग
सुन पाएँगे

पुस्तक

इस तरह के चिह्न को
क्लिक करने से
पुस्तक का पूरा PDF
खुल जाएगा

वेब साइट

इस तरह के चिह्न को
क्लिक करके आप सीधे
उस वेब साइट पर जा सकेंगे

साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है,
अपितु एक नया वातावरण देना भी है।
- सर्वपल्ली राधाकृष्णन

साधना के शिखर शिरोमणि : आ.श्री विद्यासागर

संपादकीय

– डॉ. अखिल बंसल

जैन धर्म की अर्हत् परंपरा के श्रमणाचार्यों में इस युग के प्रभावी संत आचार्य श्री विद्यासागर जी सिरमौर रहे हैं। दक्षिण भारत में कर्नाटक के सदलगा नामक छोटे से ग्राम से अपनी जीवन यात्रा का शुभारंभ करने वाला विद्याधर नाम का यह पथिक विद्या का ऐसा व्यसनी बनेगा किसी ने सोचा भी न था। १० अक्टूबर १९४६ को पिताश्री मल्लप्पा के घर माता श्रीमती जी की कोख से जन्म लेकर प्रारंभिक शिक्षा के उपरांत संयम की दिशा में कदम बढ़ाकर जयपुर स्थित चूलगिरी की तलहटी खनियां जी में आचार्य श्री देशभूषण जी से ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया और फिर राजस्थान की धर्मनगरी अजमेर में २२ वर्ष की अल्पवय में ३० जून १९६८ को ज्ञान के सागर आचार्य श्री ज्ञान सागर जी से अपनी गगरी भरकर आत्मपिपासुओं की प्यास बुझाने दीक्षित होकर दिगंबर भेष धारण कर शांति की खोज में निकल पड़ा। कन्नड़ भाषी होने के उपरांत हिंदी, प्राकृत, संस्कृत व अंग्रेजी में महारत हासिल कर प्रवचन कला में पारंगत होकर नसीराबाद में २२ नवंबर १९७२ को आचार्य पद ग्रहण किया।

इस बीच काव्य लेखन में सिद्धहस्त मूकमाटी जैसे महाकाव्य का प्रणयन किया। नर्मदा का नरम कंकर, डूबो मत लगाओ डुबकी, तोता क्यों रोता तथा चेतना के गहराव में जैसे हिंदी काव्य के अनमोल रत्न समाज को हस्तगत किये। आचार्य श्री द्वारा सृजित संस्कृत साहित्य में शारदा स्तुति, श्रमण शतकम्, चैतन्य चन्द्रोदय शतकम्, निरंजन शतकम्, भावना शतकम्, परिषह जय शतकम्, सुनीति शतकम् तथा धीवरोदय जैसी उल्लेखनीय कृतियां समाज का दिग्दर्शन करती हैं।

'मूकमाटी' जैसे महाकाव्य ने आपकी ख्याति में चार चांद लगा दिए। जैन– जैनेतर विद्वानों ने संस्कृत तथा हिंदी में ३२५ से अधिक समीक्षात्मक लेख लिखकर साहित्य जगत को चौंका दिया। यही नहीं इस महाकाव्य पर ४ डीलिट, २२ पी– एचडी, ७ एम फिल, २ एम एड तथा ६ लघु शोध प्रबंध लिखे गए जो एक रिकॉर्ड है।

बचपन से ही धर्म में अनुरक्त रहने वाला यह साधक ५० से अधिक कृतियों का सृजन कर पामर जीवों के उद्धार में निमित्त बना। आपके द्वारा निजानुभव शतक

मित्रता की सच्ची परीक्षा संकट में होती है,
जो मित्र के उत्कर्ष को बर्दाश्त कर ले,वही सच्चा मित्र होता है।
- हरिशंकर परसाई

सुनीति शतक, दोहा– दोहन शतक, सूर्योदय शतक, पूर्णोदय शतक, सर्वोदय शतक तथा जिन स्तुति शतक जैसी अनेक कृतियों की रचना की गई। इन अप्रतिम कृतियों ने समाज का मन मोह लिया। आपके द्वारा सृजित अन्य कृतियों में कुंदकुंद का कुंदन निजामृतपान, हाईकू, समन्तभद्र की भद्रता तथा जैन गीता प्रमुख हैं।

तीर्थ क्षेत्रों के संरक्षण में अग्रणी रहते हुए आपने सिद्धोदय क्षेत्र – नेमावर, चंद्रोदय तीर्थ – डोंगरगढ, सर्वोदय तीर्थ अमरकंटक, तथा कुण्डलपुर में समाज को प्रेरित कर भव्य जिनालयों का निर्माण कराया। आपकी दिव्य देशना से अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार हुआ जिनमें बीना–बरहा, थूबौन जी, मढिया जी– जबलपुर, रामटेक, विदिशा, सिलवानी तथा टडा प्रमुख हैं। आपकी महत्वपूर्ण भूमिका ने जैन संस्कृति के बहुमूल्य देवालयों को सुरक्षित कर नया रूप प्रदान किया। शिक्षा, चिकित्सा, जीव दया तथा सामाजिक कुरीतियों को उन्मूलन में भी आपके योगदान को युगों– युगों तक याद किया जाएगा। आपके द्वारा ३९८ से अधिक दीक्षाएं हुई जिनमें १३० मुनि १७२ आर्यिका २२ ऐलक, २४ क्षुल्लक, ३ क्षुल्लिकाएं तथा सैकड़ों की संख्या में ब्रह्मचारी भाई बहिन समाहित हैं।

देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, म.प्र.के तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सहित सभी दलों के राजनेता अक्सर आपसे परामर्श लेते रहे हैं। आपके त्याग के विषय में तो क्या कहें –आजीवन चीनी, नमक, हरी सब्जियां, फल, दही, तेल, सूखे मेवे, अंग्रेजी औषधि तथा चटाई का त्याग तो किया ही आजीवन चश्मा नहीं लगाया। वे लकडी के तख्ते पर एक करवट सोते थे, नग्न रह कर पैदल ही भ्रमण करते थे।

ऐसे विराट व्यक्तित्व के धनी आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी अब हमारे बीच नहीं हैं। कुछ समय से आप अस्वस्थ थे। १७ फरवरी की अर्द्धरात्रि २.३५ पर जब १८ फरवरी दस्तक दे चुकी थी आपने संलेखनापूर्वक समाधि धारण की और इस नश्वर देह का परित्याग कर दिया। ऐसे विराट व्यक्तित्व के धनी गुरुवर विद्या सागर जी के चरणों में कोटिशः नमन।

दर्पण में मुख
और संसार में सुख होता नहीं
बस दिखता है।
(डा.अखिल बंसल की डायरी से)

कोई भी मार्ग बदला जा सकता है, छोड़ा जा सकता है।
पथ भ्रष्ट होना कुछ नहीं होता, यदि लक्ष्य भ्रष्ट न हो।
- अज्ञेय

मैं शोक में हूं, : मोदी

– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री मोदी ने आचार्य विद्यासागर को नमन किया, श्रद्धांजलि दी। कहा– मैं शोक में हूं, मेरे लिए ये व्यक्तिगत क्षति है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विधानसभा चुनाव के दौरान ५ नवंबर को डोंगरगढ़ भी पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने आचार्य विद्यासागर जी महाराज से चंद्रगिरी पर्वत में मुलाकात की प्रधानमंत्री ने उनसे आशीर्वाद लिया और चार्चा की थी। २४ घंटे के भीतर– भीतर एनालिसिस करके मुझे उनका संदेश आता था। इसे पता चलता है कि वे कितने जागरूक थे। उनके सिद्धांत और उनका आशीर्वाद ऐसे ही भारत भूमि को प्रेरणा देता रहेगा।

दरिद्रता सब पापों की जननी है, और
लोभ उसकी सबसे बड़ी संतान है।
- जयशंकर प्रसाद

मानवता के सच्चे सेवक

– अमित शाह, गृहमंत्री भारत सरकार

महान संत परमपूज्य आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज जैसे महापुरुष का ब्रह्मलीन होना, देश और समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने अपनी अंतिम साँस तक सिर्फ मानवता के कल्याण को प्राथमिकता दी। मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि ऐसे युगमनीषी का मुझे सान्निध्य, स्नेह और आशीर्वाद मिलता रहा।

मानवता के सच्चे उपासक आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जाना मेरे लिए एक व्यक्तिगत क्षति है। वे सृष्टि के हित और हर व्यक्ति के कल्याण के अपने संकल्प के प्रति नि:स्वार्थ भाव से संकल्पित रहे।

विद्यासागर जी महाराज ने एक आचार्य, योगी, चिंतक, दार्शनिक और समाजसेवी, इन सभी भूमिकाओं में समाज का मार्गदर्शन किया। वे बाहर से सहज, सरल और सौम्य थे, लेकिन अंतर्मन से वज्र के समान कठोर साधक थे। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य व गरीबों के कल्याण के कार्यों से यह दिखाया कि कैसे मानवता की सेवा और सांस्कृतिक जागरण के कार्य एक साथ किये जा सकते हैं।

आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन युगों–युगों तक ध्रुवतारे के समान भावी पीढ़ियों का पथ प्रदर्शित करता रहेगा। मैं उनके सभी अनुयायियों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ।

सफलता अनुभव से आती है और
अनुभव हमेशा बुरे अनुभव से आता है।

- अज्ञात

जीते जागते परमात्मा

– शिवराज सिंह चौहान
पूर्व मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश

राष्ट्र संत आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का समाधिपूर्वक निधन का समाचार सम्पूर्ण जगत को स्तब्ध और निशब्द करने वाला है। मेरे जीवन में आचार्य श्री का गहरा प्रभाव रहा, उनके जीवन का अधिकतर समय मध्यप्रदेश की भूमि में गुजरा और उनका मुझे भरपूर आशीर्वाद मिला
आचार्य श्री के सामने आते ही हृदय प्रेरणा से भर उठता था। उनका आशीर्वाद असीम शांति और अनंत ऊर्जा प्रदान करता था। उनका जीवन त्याग और प्रेम का उदाहरण है आचार्य श्री जीते जागते परमात्मा थे। उनका भौतिक शरीर हमारे बीच ना हो लेकिन गुरु के रूप में उनकी दिव्य उपस्थिति सदैव आस पास रहेगी।
आचार्य श्री शीघ्र ही परमपद सिद्धत्व को प्राप्त हों।
गुरुवर के चरणों मे शत शत नमन !
नमोस्तु भगवन!

जो लोग गिरने से डरते हैं,
वह कभी भी जीवन में उड़ान नहीं भर सकते।
- अज्ञात

मप्र पर रहा आशीर्वाद

– डॉ. मोहन यादव मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आचार्य विद्यासागर जी का मध्य प्रदेश के प्रति विशेष स्नेह रहा है। प्रदेशवासियों को उनका भरपूर आशीर्वाद मिला उनके सदकार्य ह में सदैव प्रेरित करते रहेंगे। आध्यात्मिक चेतना के पुंज, विश्व वंदनीय संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य गुरुवर श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज की संलेखना पूर्वक समाधि सम्पूर्ण जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। आचार्य जी का संयमित जीवन और विचार सदैव प्रेरणा देते रहेगा।

वीडी ने जताया शोक

– विष्णुदत्त शर्मा बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने संत शिरोमणि आंचार्य भगवंत गुरुदेव प्रवर श्री १०८ विद्यासागर महामुनिराज के सल्लेखना पूर्वक समाधि पर शोक व्यक्त किया है। आचार्य विद्यासागर जी महाराज वर्तमान के वर्धमान हैं। प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य आचार्य जी तप, ज्ञान, संयम, आराधना और करुणा की प्रतिमूर्ति थे। आचार्य विद्यासागर जी महाराज इस देश के एक ऐसे संत जो वर्तमान के वर्धमान हैं, आज हमारे बीच नहीं है।

कोशिश हमें अंतिम क्षण तक करनी चाहिए, जीवन में सफलता मिले या न मिले, तजुर्बा तो मिलता ही है।

- अज्ञात

सम्यक ज्ञान, दर्शन एवं सम्यक सुदृढ़ चरित्र के त्रिवेणी

आवरण सेतु

– वेद प्रकाश सिंह प्रकाश ककरी,
बाराबंकी, उ. प्र.

पर उपदेश कुशल बहु तेरे' तो बहुत मिल जाते हैं, किन्तु जीवन में ऐसे बहुत कम लोग मिलते हैं ; जिनके सन्निकट होते ही, उनके आचार विचार एवं व्यवहार के समन्वित तप तेज से मनः मस्तिष्क एक सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता है।

ऐसे महापुरुषों का स्नेह आशीर्वाद हमारी बहुत बड़ी पूँजी है। ऐसे ही वरेण्य, सुनाम धन्य संत महापुरुषों में से एक संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्या सागर जी भी थे। उनका सानिध्य प्राप्त लोगों के लिए तो उनका वो छिन पल अत्यंत आह्लाद कारी एवं अवर्णीय मनः शान्ति के तो होते ही थे, किन्तु जिन्होंने उनके श्री मुख से सर्व सुखाय उनके विचार सुने, उसको भी उनके प्रेरित भाव धन्य कर गए।

ऐसे महान संतों के सम्पूर्ण जीवन वृत्ति को देखकर ऐसा लगता है, कि किस प्रकार देश में अध्यात्म अजस्र, अविरल जल धारा सदृश अविरत प्रवाहित होकर समाज का कल्याण करता रहा है। ऐसे श्रेष्ठ संतों के समय में रहने, देखने का सौभाग्य मिलने से स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता हूँ।

सदियों से ही आदि आद्यात्मिक गुरू भारत की यह विशेषता रही है कि यहाँ की पावन धरती ने ऐसी ही अनेक महान विभूतियों को जन्म दिया है, जिन्होंने लोगों को दिशा बोध के साथ–साथ समाज को भी बेहतर बनाने में महत्व पूर्ण योगदान दिया है। आचार्य विद्यासागर जी का जीवन भी वर्तमान के साथ –साथ भविष्य नव निर्माण की ओर, सबके लिए प्रेरणा का अजस्र स्रोत रहा है।

संत शिरोमणि आचार्य विद्या सागर जी महाराज स्वयं सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन तथा सम्यक सुदृढ़ चरित्र के त्रिवेणी थे। आप के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उनका सम्यक दर्शन जितना उनके आत्म बोध के लिए था, उतना ही सशक्त उनका लोक बोध भी था। करुणा, सेवा, संयम एवं तपस्या से परिपूर्ण आचार्यवर का सम्पूर्ण जीवन भगवान महावीर जी के आदर्शों का प्रतीक रहा। जैन धर्म की मूल भावना के वे स्वयं उद्धरण रहे हैं। मानव मात्र के प्रति उनका अनन्य प्रेम सिद्ध करता है कि जैन धर्म में जीवन का कितना महत्व है।

अगर नियत अच्छी हो तो
नसीब कभी भी बुरा नहीं होता।।

- अज्ञात

त्यक्त भोग एवं संयमित जीवन का परिपालन उन्होंने जीवनपर्यंत किया, जो आज सभी अनुयायीयों के लिए प्रेरणा एवं आदर्श का स्वरूप है। उनका व्यक्तित्व ही आज पूरी दुनियां को जैन– धर्म और भगवान महावीर जी के जीवन से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने अनुयाइयों से सीखने और आध्यात्मिक विकास के लिए निरन्तर प्रयास करने का आग्रह किया। क्योकि उनका विचार था कि शिक्षा ही न्याय पूर्ण और प्रबुद्ध समाज का आधार है।

आचार्य वर ने संस्कृत, प्राकृत, आंग्लभाषा तथा हिंदी में अनेक रचनाएँ की हैं जिनमें– 'मूक माटी' में उनका क्रियात्मक यथार्थ का सजीव दिग्दर्शन होता है।

आचार्य विद्या सागर जी प्रख्यात दिगम्बर जैन संत थे, जिन्हें उनकी विद्वता व तप के लिए जाना जाता है। १० अक्टूबर १९४६ को कर्नाटक के बेलगाँव जिले के सदलगा में शरद पूर्णिमा को जन्मे विद्या सागर जी मल्लपा एवं श्री मंती के सुपुत्र थे। ३० जून १९६८ को २२ वर्ष की अवस्था में आचार्य ज्ञान सागर द्वारा इन्हें आचार्य पद दिया गया।

समाज देश एवं विश्व के कल्याण के लिए आप सदैव सतत प्रयत्नशील रहे। ये दैदीप्यमान अलौकिक प्रकाश पुंज १८ फरवरी २०२४ को अपने अनंत चिदानंद स्वरूप में लीन हो गया। हम सब उनके बताए हुए रास्ते पर चलकर आत्म कल्याणार्थ एवं राष्ट्र का नव निर्माण करें, यही आचार्य वर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

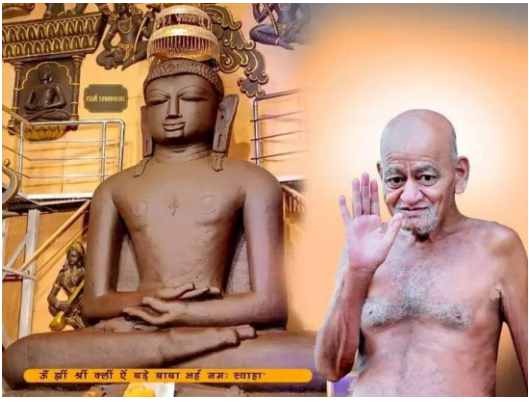

एक मिनट की सफलता बरसों की असफलता की कीमत चुका देती है।

- अज्ञात

आगम के पर्याय : आचार्य श्री विद्यासागर

आवरण सेतु

– ज्ञानेन्द्र पाण्डेय `अवधी – मधुरस`
अमेठी(उ. प्र.)

श्रमण परंपरा से नि:सृत जैन–धर्म भारत का प्राचीन धर्म और दर्शन है । सिंधु घाटी से मिले जैन शिलालेख इसका प्रमाण हैं । वर्तमान में प्रचलित जैनधर्म भगवान आदिनाथ के समय से प्रचलन में आया । यहीं से तीर्थंकर परंपरा प्रारंभ हुई । जैनों में भी बौद्धों के समान ही २४ तीर्थंकर हैं । प्रथम ऋषभ जी व महावीर स्वामी अंतिम तीर्थंकर हैं । जैनधर्म श्वेतांबर व दिगंबर दो संप्रदाय में परासृत है ।

अनाशक्त योगी, आत्मसंयमी, दिगंबर मुनि परंपरा के सुप्रसिद्ध आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज दिगंबर जैन संप्रदाय के अनुयायी थे । इनका जन्म १० अक्टूबर , १९४६ को सदलगा , बेलगाव, जिला – कर्नाटक में एक कन्नड़ भाषी जैन परिवार में हुआ था । चार भाइयों में आचार्य श्री दूसरे थे तथा उनकी दो छोटी बहनें भी थीं । आचार्य श्री को बचपन में नैनू (मक्खन) खाने का बड़ा शौक था , जबकि बाद में तापसी जीवन में केवल सादी दाल–रोटी ही खाती रहे । कभी भी दूध सूखे मेवे व सब्जी का उपयोग नहीं किया । केवल एक अंजुली जल पीते थे तथा एक ही बार भोजन भी करते थे । आचार्य श्री ने कभी भी गद्दे और तकिया का सहारा लेकर शयन नहीं किया । फर्श/जमीन पर शयन करते थे तथा लकड़ी के मंच पर बैठकर प्रवचन करते थे ।

कुशाग्र बुद्धि आचार्य श्री को १९६८ में अजमेर में २२ वर्ष की उम्र में आचार्य शांतिसागर जी महाराज के वंश से आने वाले आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज से दिगंबर जैन मुनि दीक्षा मिली तथा १९७२ में आचार्य पद प्रदान किया गया । आचार्य श्री के पिता मल्लपा , माता श्रीमती जी , जेष्ठ भ्राता महावीर अष्ठगे जी अनंत नाथ जी व शांतिनाथ जी तथा दोनों बहनों ने भी दीक्षा लेकर आचार्य धर्म सागर जी के संघ में शामिल हो गए । आचार्य श्री संस्कृत और प्राकृत भाषा के उत्कट विद्वान थे । साथ ही इन्हें हिंदी , कन्नड़ , मराठी , अंग्रेजी सहित कई भाषाओं का भी ज्ञान था । इन्होंने ७०० हाइकु तथा हिंदी महाकाव्य "मुकमाठी" की रचना की । इनके द्वारा निरंजन शतक , भावना शतक , परिषहजय शतक, सुनीति शतक और श्रमण शतक भी रचित हैं । मुकमाठी हिंदी महाकाव्य का अंग्रेज़ी अनुवाद श्री लालचंद जैन ने किया है ।

जिन व्यक्तियों को पढ़ने की आदत होती है,
वह कभी भी अकेले नहीं हो सकते।
- अज्ञात

आचार्य श्री ने जैन धर्म के प्रचार–प्रसार में अपना महती योगदान दिया है । ये चातुर्मास (वर्षा ऋतु) को छोड़कर एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं रुकते थे। दिगंबर मुनि के रूप में इन्होंने जैन धर्म का प्रचार – प्रसार बखूबी किया है । इनके द्वारा अनेकों लोक कल्याणकारी संस्थाएं स्थापित हैं। आचार्य श्री – ४०० से अधिक जैन मुनि आर्यिकाएं, ऐलक, छुल्लक व ब्रह्मचर्य दीक्षाएं देने वाले एकमात्र आचार्य हैं। आचार्य श्री मूलतः आचार्य शांतिसागर जी द्वारा स्थापित परंपरा से हैं ।

आचार्य श्री पर लैंड मार्क फिल्म द्वारा २५ नवंबर , २०१८ को 'विद्योडे' नामक एक वृत्तचित्र भी जारी किया गया है ।

१८ फरवरी, २०२४ को ७७ वर्ष की आयु में छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ में चंद्रगिरि तीर्थ पर ३ दिनों के लिए 'सल्लेखना' लेकर आचार्यत्व त्याग कर आचार्य श्री ने समाधि पूर्वक त्याग की।

आचार्य श्री द्वारा कन्याओं की शिक्षा के लिए ज्ञानोदय विद्यापीठों की स्थापना की गई है। साथ ही आध्यात्मिक जागृति , गरीबी उन्मूलन , स्वास्थ्य , शिक्षा इत्यादि अनेक क्षेत्रों में इनके द्वारा अक्षुण्ण कार्य किया गया , जिसके लिए देश व समाज इनका सदैव ऋणी रहे गा।

विद्यासागर जी जिन शासित हैं

काव्य कानन सेतु

– हिमांशु जैन, 'मीत' इंदौर

अष्ट दिशा के वस्त्र गहे ,भोजन जिनके कर पात्रित हैं।
विद्यासागरजी संत अहो ,परम पूज्य जिनशासित हैं।।
जिनका अविचल त्याग धर्म की,ध्वजा चतुर्दिक फहराता।
वो मोक्ष–पथिक जिनका कणाद,से भी न रहा कोई नाता।।
उन परम पूज्य जिन–चरणों में , मेरा नमन समर्पित है।
विद्यासागरजी संत अहो, परम पूज्य जिनशासित हैं।।
पूर्ण अहिंसक चर्या है ,वो पिच्छी मयूर के धारी हैं।
वो महात्राण महा–देव जगत में, ईश्वर के अवतारी हैं।।
उन पूर्ण तपस्वी निष्कामी, चरणों मन अर्पित है।
विद्यासागरजी संत अहो, परम पूज्य जिनशासित हैं।।
वो पूर्ण दिगंबर वैरागी,निष्काम कर्म के योगी हैं।
क्या उनकी चर्या समझ सकें,जो कामी खल और भोगी हैं।।
उन श्रेष्ठ शलाका पौरुष के,पद –चिह्न चतुर्दिक चित्रित हैं।
विद्यासागरजी संत अहो, परम पूज्य जिनशासित हैं।।

जीवन में संघर्ष जितना कठिन होगा,
सफलता उतनी ही ऊंची और शानदार होगी।
- अज्ञात

आध्यात्मिक चेतना के सूर्य परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर

आवरण सेतु

– डॉ. संध्या जैन `श्रुति`, जबलपुर

विश्व वंदनीय परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी वीतरागी संत, जगत के श्रेष्ठ मार्गदर्शक, मोक्ष मार्ग के पथिक, २१वीं सदी के विलक्षण व्यक्तित्व हैं जिनकी वाणी अक्षरशः सिद्ध हो जाती थी तप, ज्ञान, संयम, साधना की प्रतिमूर्ति आचार्य विद्यासागर जी के प्रति प्रत्येक की आस्था स्पष्ट दिख पड़ी है।

१० अक्टूबर १९४६ को कर्नाटक सदलगा में माँ श्रीमती जी एवं पिता मल्लप्पा अष्टगे के घर जन्मे विद्याधर धरती के देवता बन गए इन छत्तीस गुणधारी, अनासक्त महायोगी ने त्याग–तपस्या एवं निर्लिप्तता का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया कि उन्हें वर्तमान के वर्धमान माना जाने लगा, लोग उन्हें चलते–फिरते तीर्थंकर कहते हैं। १८ फरवरी की वह सुबह जब ज्ञान दिवाकर डूब गया, आचार्य विद्यासागर जी के प्रति हर एक अवाक, नमित हो गया। जिनका ५५ वर्षों का तपस्वी जीवन शक्कर, नमक, मेवे, फल फूल, तेल, सब्जियाँ सभी का तो त्याग था।

मात्र ९ वर्ष की उम्र से विरक्ति का भाव बालक विद्याधर में उत्पन्न हो गया था उन्हें समझ में आ गया था यह संसार–असार है और उन्होंने स्वयं को आत्मोन्मुखी बना लिया आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि व अनुशासित जीवन के साथ ही आचार्य गुरु ज्ञान सागर जी के सानिध्य में ३० जून १९६८ को मुनि पद धारण किया एवं २२ नवंबर १९७२ को आचार्य ज्ञान सागर जी ने उन्हें आचार्य पद से विभूषित कर दिया।

कोमल काया ने कर्मठ पथ पर चलने की दिव्य शक्ति प्राप्त कर ली थी। आत्मा के राही बनने का संकल्प धारा, धरती बिछोना और नभ की चादर ,वस्त्र दिशाओं के थे रूप दिगंबर धारण करके विद्यासागर मुनिराज बने। डायरेक्ट मुनि पद नहीं तो जैन धर्म में पहले छुल्लक, फिर ऐलक फिर मुनि बनते हैं आचार्य ज्ञान सागर जी की दिव्य दृष्टि पहचान गई थी कि विद्याधर का भविष्य क्या है और उन्होंने सीधे ही मुनि दीक्षा दे दी। आचार्य श्री विद्यासागर ने अनेकों कठिन व्रत ग्रहण किये और पिच्छी, कमंडल लेकर विनय और संयम को साथी बना सतत् साधना का पालन करने लगे। आषाढ शुक्ल पंचमी ३० जून १९६८ को मात्र २२ वर्ष की नादान उम्र में दिगंबरी दीक्षा धारण कर बाह्य वस्तुओं का परित्याग कर पदयात्री, करपात्री बन गए।

खुद पर विश्वास करें, निश्चिंत रहें कि
बड़े से बड़ा लक्ष्य आपके कदम चूमेगा।
- अज्ञात

आचार्य विद्यासागर जी महाराज

आवरण सेतु

– सीमा गर्ग मंजरी मेरठ कैंट(उत्तर प्रदेश)

संत शिरोमणि परम पूजनीय आचार्य श्री विद्यासागर जी वीतरागी संत, सकल जगत के श्रेष्ठ मार्गदर्शक, मोक्ष मार्ग के पथिक, विलक्षण व्यक्तित्व के दैदीप्यमान सितारे थे। आप एक विद्वान,शिक्षक एवं आध्यात्मिक व्यक्तित्व के स्वामी थे। आपने अपना जीवन अहिंसा,करुणा, आत्म–बोध को बढ़ावा देने के लिए समर्पित कर दिया।

आचार्य जी का जन्म १० अक्टूबर १९४६ को शरद पूर्णिमा के दिन कर्नाटक प्रांत के बेलगाम जनपद में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पिता श्रीमल्लपा बाद में संन्यासी हो गए थे। तत्पश्चात आपकी माता ने भी संन्यास ले लिया था और वह उस समय आर्यिका समयमति के नाम से जानी जाती थीं। आचार्य विद्यासागर जी बचपन से ही कठोर जप–तप आत्म संयम एवं नियम–संयम को निभाने वाले थे। आप अहिंसा परमो धर्म का आचरण करने वाले, सम्पूर्ण जगत को अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले थे। आप कठिन से कठिन कार्य को भी सरलता से करने वाले थे । आचार्य श्री ने तन–मन एवं वाणी से सबके कल्याण की कामना करते हुए समस्त जीवों के प्रति दयाभाव रखने का उत्तम संदेश दिया था। आपकी प्रखर विचारधारा जन समुदाय को प्रभावित करने के साथ ही नवीन दृष्टिकोण प्रदान करते थे। आप दया,धर्म,शम,दम,क्षमा, तप शुद्धि, जैसे अमूल्य गुणों से ओत–प्रोत उज्जवल विचारों के पोषक महागुणी, संत तपस्वी थे।

आचार्य विद्यासागर जी को हिंदी, संस्कृत, तमिल एवं कन्नड़ भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। आपने हिंदी एवं संस्कृत में अनेक पुस्तकें लिखी थी। जिसमें मूक माटी महाकाव्य बहुत अधिक लोकप्रिय रचना है।

आचार्य जी ने मोह माया से दूर रह कर अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं को कार्यान्वित रूप दिया। परोपकारी सेवार्थ भाव से आपने अनेक पाठशालाएं एवं गौशालाएं खुलवाई। आपके हृदय से निकले उच्च उद्गार समस्त जनमानस के हृदय को प्रेरित करने का कार्य करते थे।

सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है,
जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो।
- स्वामी शंकराचार्य

आपने विभिन्न स्थानों पर लोगों के कल्याण के लिए अनेक संस्थाओं का निर्माण करके जन समुदाय के लिए प्रेरणा का काम किया था। दिगम्बर मुनि परम्परा के आचार्य श्री एक मात्र ऐसे आचार्य हैं जिन्होंनें अभी तक ५५५ मुनि ,आर्यिका, एलक क्षुल्लक तथा ब्रह्मचारी दीक्षाएं हैं। विद्यासागर जी ने अपने ५५ वर्षों के तपस्वी जीवन में शक्कर, नमक, घी, तेल फल, फूल, सब्जियां आदि वनस्पतियों का त्याग किए हुए थे। आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से अनुशासित जीवन के साथ ही आचार्य गुरु ज्ञान सागर जी के सानिध्य में ३० जून १९६८ को मुनि पद धारण किया एवं २२ नवंबर १९७२ को आचार्य ज्ञान सागर जी ने उन्हें आचार्य पद से विभूषित कर दिया। तत्पश्चात आपकी कोमल काया ने आध्यात्मिक पथ पर चलने की दिव्य शक्ति प्राप्त कर ली।

आपके अध्यात्म पथ का राही बनने का संकल्प धारण करने से धरती बिछोना और आकाश चादर का रूप हो गया था। दिशाएं वस्त्रों का रूप थी। अतः दिगंबर रूप धारण करके विद्यासागर मुनिराज बन गए थे। आचार्य श्री विद्यासागर ने अपने जीवन काल में अनेक अनुष्ठान किए थे। अध्यात्म पथ पर अग्रसर आप विनय और संयम को साथी बनाकर सतत साधना का पालन करने लगे। आप काव्य कला के धनी शिल्पकार रहे। जीवन के यथार्थ की अनुभूति का अहसास करते हुए अपने ६३ पुस्तकें के लिखी थी। सच में तो विद्यासागर जी का साहित्य अपार एवं अगम्य विद्या लिए हुए था। आपके प्रज्ञा चक्षु से प्रभावित ज्ञानी ध्यानी संत सभी आपके चरणों में नतमस्तक होते थे।

७७ वर्ष की आयु में १८ फरवरी २०२४ को आध्यात्मिक शुद्धि हेतु आमरण उपवास 'सल्लेखना' नामक जैन परम्परा का निर्वहन करने के कारण चंद्रगिरी तीर्थ पर रात्रि २.३५ बजे आपने समाधि प्राप्त की। ऐसे ईश्वरीय प्रेम में अनन्य भाव उपासक बुद्ध एवं शुद्ध बुद्धि युक्त शब्द ज्ञान से परिपूर्ण स्वयं की आत्मा में रमण करने वाले ही तत्वबोध में रमते हैं। अतः आत्मसाक्षात्कार से परिपूर्ण आध्यात्मिक व्यक्तित्व के स्वामी विद्यासागर जी जिनकी ज्ञान क्यारी सदैव आध्यात्मिक गुणों से महकती रही। जिनके हृदय में समाज एवं राष्ट्र कल्याण हेतु अजस्र ज्ञान धारा निरंतर बहती रही। ऐसे परम पूज्य, प्रातः स्मरणीय विद्यासागर आचार्य जी को हमारा बारंबार साष्टांग प्रणाम है। आप जैन धर्म के संत समाज के अनुकरणीय व्यक्तित्व थे। समाज सदैव आपके दिखाए गए मार्ग पर चलता रहेगा।

सत्याग्रह बल से नहीं,
हिंसा के त्याग से होता है।
- गांधी जी

महायोगी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

आवरण सेतु

– राजेन्द्र मिश्रा जबलपुर, मध्यप्रदेश

परमश्रेय संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की वाणी में जीवन का माधुर्य, सृजनात्मकता एवं प्रकृति से तादात्म्य – त्रिवेणी संगम। चेतना में निष्पक्षता,धर्म ध्वजा के युग प्रवीर–सर्वजन हिताय के युगपुरुष, वर्तमान के वर्धमान। आपके जीवन का आलोक हमारे अंधियारों में सदैव ज्योति प्रदान करेगा। आध्यात्मिक जागृति के लिए आपका प्रयास अमोलक है। आप शिक्षा और स्वास्थ्य के हितचिंतक रहे। समाज में आपका योगदान अतुलनीय है। आचार्य श्री कहते हैं " संस्कृति और धर्म बचाना है तो इंडिया को अपने प्राचीन गौरव के साथ भारत बनाना होगा"।

आपकी राष्ट्रीय चेतना और व्यापक सांस्कृतिक दृष्टि, वाणी का ओज, सहज भाषा के तत्वों पर बल, और सात्विक मूल्यों का आग्रह – हमारे जीवन को पारम्परिक रीति से जोड़ने में सहायक होता है।

आपने संपूर्ण जगत के लिए जीवन मूल्यों को सहेजा और ओजमयी संदेशों से मानव के कल्याण की राह बताई। नियम से किया गया कार्य सफलता के नये–नये सोपान बनाता है। ये जीवन आधारभूत तत्त्व है जो अनेक सत्यों, आदर्शों एवं नियमों के द्वारा संचालित होता है। सत्य, धर्म और आस्था के साथ हम अपने जीवन को आदर्श बना सकते हैं। आचार्य श्री के प्रेरक संदेश, प्रेरक विचारों को आत्मसात कर जीवन को सुखमय बना सकते हैं। ये संदेश हमारे पथ को सदैव प्रशस्त करते रहें गे। तप, त्याग और संयम के महान संत के चरणों में शत शत नमन।

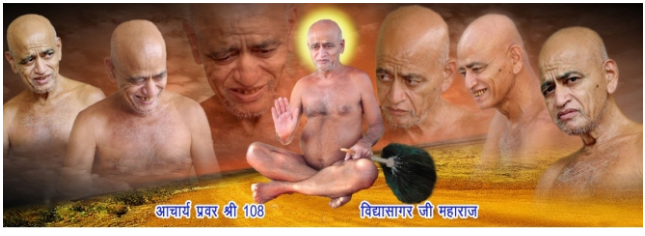

उठो,जागो और लक्ष्य तक मत रुको।

- विवेकानंद

आचार्य शिरोमणि श्री विद्यासागर जी

– श्रीमती भारती माहेश्वरी, नलखेड़ा

आचार्य श्री का जन्म कर्नाटक के छोटे से गांव सदलगा में जैन कुल में हुआ था। आप बचपन से ही अहिंसावादी ,न्यायप्रिय, तथा कठोर संयम पर चलने वाले थे। लघु वय में ही आपने जिन दीक्षा ग्रहण कर ली। अपनी तप, त्याग–तपस्या के बल पर आपने जैन संतों में महत्वपूर्ण स्थान पाया। ऐसे बिरले ही होते हैं जिन्हें संत महात्मा के रूप में पूरा जग नमन करता है। मुनि धर्म संबंधी महाव्रतों का पालन करते हुए आपने साधना और संयम का मार्ग अपनाया। सुंदर–सुंदर दृष्टांत देते हुए संसार के लोगों को जागृत किया। मन, वाणी, कर्म वचन से किसी का भी बुरा न सोचना, अपने प्रवचन में संयम में रहते हुए जीवों के प्रति दया भावना, अहिंसा का पालन करते हुए हिंसा, झूठ, चोरी से दूर रहते हुए आध्यात्मिक जीवन की यात्रा का आनंद लेना, अपने प्रवचन के माध्यम से लोगों को बताया।

सर्दी, गर्मी, धूप सबको सहन करते हुए जैसी वेशभूषा है ,उस वेशभूषा में रह कर जीवन को कैसे जिया जाए,यह आचार्य श्री ने हमेशा सरल तरीके से जीवन जीने का पाठ हमें पढ़ाया।

हमेशा सत्य और मधुर भाषा बोलते हुए जीवन को यथार्थ में जीते हुए सभी के लिए मीठी वाणी बोले। क्रोध,आवेश,लालच में न फँसकर जीवों के प्रति प्यार करना सिखाया।

कम साधन में भी जीवन को जिया जा सकता है। सात्विक आहार,साधारण जीवन जी कर अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर सरल तरीके से जीवन जीने का मार्ग आचार्य श्री ने हमें सिखाया।

हम आचार्य श्री के वचनों को मन,कर्म,वचन से निभाकर जीवन निष्ठापूर्वक जीते हुए अथक प्रयास करें कि अपना जीवन पूरी सच्चाई,ईमानदारी और निष्ठा से जीते हुए गुरुवर के वचनों का पालन करते रहें।

हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमने अपने जीवन काल में गुरु जी के सान्निध्य में रहते हुए उनके वचन,कर्म को ध्यान में रखते हुए संयमित जीवन जीना उनसे सीखा। सभी लोग उनके संदेशों को अपने जीवन में अपना कर अपने जीवन को सार्थक कर सकें, यही आचार्य श्री के प्रति हमारी श्रद्धांजलि है।

मन एक भीरू शत्रु है,
जो सदैव आपके पीठ पीछे से वार करता है।
- मुंशी प्रेमचंद

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

– कृष्णा गोयल,
पंचकूला (हरियाणा)पूर्व ज्वाइंट रजिस्ट्रार

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं के उत्थान के लिए प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को मनाया जाता है। पहला अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 28 फरवरी 1975 को मनाया गया था जब न्यूयॉर्क में वस्त्र बनाने के कारखाने में काम करने वाली 15000 महिलाओं ने अपने काम करने की बेहतर परिस्थितियों के लिए और अपनी पगार बढ़ने के लिए जुलूस निकाला था। कलारा जेटकिंन, जो सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी जर्मनी की लीडर थी, ने यह दिन प्रत्येक वर्ष मनाने की मांग रखी। यू एन ओ ने दो वर्ष बाद इस प्रस्ताव को मान्यता देकर 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित कर दिया। 8 मार्च 1992 से यह दिन प्रत्येक वर्ष दुनिया भर में हर्षोल्लास से मनाया जाने लगा। कुछ लोग केरल की एक घटना का भी इससे संबद्ध मानते हैं। 200 वर्ष पहले केरल के तटवर्ती इलाकों में चलन था कि निम्न जाति की महिलाएं अपनी कमर का ऊपर का हिस्सा नहीं ढक सकती थी। उन्हें स्तन तक ढकने के लिए टैक्स देना पड़ता था । नागुली नाम की एक साधारण महिला ने वह काम किया जिससे सभी लोग स्तबध रह गए । वह स्तन ढक कर रखती थी। जब उससे टैक्स मांगने के लिए राजा के लोग आए तो वह अंदर जाकर तलवार से अपनों दोनों स्तन काटकर थाली में रख कर बाहर ले आई और टैक्स मांगने वालों को कहा "ये लो"! ज्यादा खून बहाने से उसकी मृत्यु हो गई। उसका पति उससे बहुत प्रेम करता था। उसकी अर्थी के साथ अग्नि में जलकर वह भी मर गया। उसकी याद में 1822-23 1828-29 और 1858 में क्रांति मनाई गई । आज भी वहां 200 सालवी वर्षगांठ मनाई जा रही है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं के उत्थान के लिए, उनको उनके अधिकार दिलाने के लिए मनाया जाता है।

इस अंक के सहयोगी

अखिल सेतु (त्रैमासिक) का यह प्रथम अंक आपके हाथों में है। इसका अर्थ सहयोग श्रीमती शैल बंसल व उनके सुपुत्र श्री अंशुल जैन , जयपुर द्वारा प्राप्त हुआ है। आपका हृदय से आभार।

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती,
धर्म करने से पाप और मौन रहने से कलह नहीं होता।
- चाणक्य

परम श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यासागर जी को शब्द सुमन समर्पित

काव्य कानन सेतु

– डॉ. मनोरमा गुप्ता `बाँसुरी`, जबलपुर

जन–जन के श्रद्धेय संत श्री विद्यासागर जी भगवन।
जैन समाज के परम पूजनीय निर्मल तनमन।।
दस अक्टूबर सन उन्नीस सौ छियालिस का दिन पावन।
कर्नाटक का बेलगांव जिला, सदलगा गांव सुहावन।।
प्रगटे महामुनीश्वर जी संयमी पिता `श्रीमल्लप्पा` के घर।
धर्मपरायण माता `श्रीमती` से पाया दिव्य कलेवर।।
सन अड़सठ को अजमेर राजस्थान की धरा पर।
मुनि दीक्षा ली वहाँ गुरु आचार्य श्री ज्ञानसागर ।
संपूर्ण परिवार ने संन्यासी बन, अध्यात्म ज्ञान फैलाया।
त्याग तपस्या की मूरत बन, गुरुश्री से आचार्य पद पाया।
आचार्यश्री जीते जागते परमेश्वर, हृदय प्रेरणा से भरता।
उनका दर्शनाशीष असीम शांति,ऊर्जा प्रदान करता।
मोह –माया से परे रह कर शालायें,गौशालायें खुलवायीं।
परसेवा परोपकार की ज्योति समाज में जलवायीं।।
संलेखनापूर्वक समाधि लेकर ,चंद्रगिरि में त्यागा नश्वर तन।
आचार्य श्री के चरणों में शत–शत नमन और वंदन।।

हजारों योद्धाओं पर विजय पाना आसान है,
लेकिन अपने ऊपर विजय पाने वाला सच्चा विजेता होता है।
- गौतमबुद्ध

वो चमकता सितारा खो गया

काव्य कानन सेतु

– स्वप्निल जैन, छिंदवाड़ा, (म.प्र)

वो चमकता सितारा खो गया है,
ये आस्मां वीराना हो गया है।
जिनके होने से सब कुछ था,
आज सब कुछ होने के बाद भी,
मानो सब कुछ लुट सा गया है।।
जिनके होने से महकती फूलों की बगिया थी,
जिनके होने से नदियों में मधुर कल–कल सी ध्वनियाँ थीं।
जिनके होने से पतझड़ भी बसंत बन खिलता था,
जिनके होने से पहाड़ भी मुस्करा पड़ता था।
जिनके होने से गौशाला में गाय मुस्कराती थी,
जिनके होने से हथकरघा में खादी बुनके आती थी।
जिनके होने से चंदा की चाँदनी भी खिलती थी,
जिनके होने से सूरज की गर्मी भी मिलती थी।
जिनके होने से दीपक की लौ जलती थी,
जिनके हाने से जीवन ज्योति प्रखर हो उठती थी।
जिनके होने से बना अस्तित्व मेरा स्वाभिमानी था,
जिनके होने से बना व्यक्तित्व मेरा आसमानी था।।
वो चमकता सितारा खो गया है,
ये आस्मां वीराना हो गया है।।

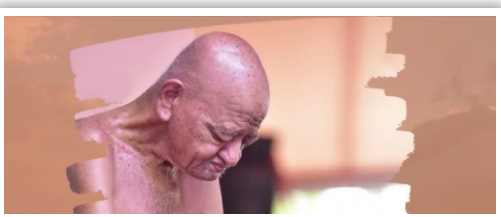

**ऐसे देश को छोड़ देना चाहिए,
जहां धन तो मिले पर सम्मान नहीं।**

- विनोबा भावे

अनुराग की कलम से

काव्य कानन सेतु

– अनुराग अचल

माँ, बहन, बेटी, पत्नी, बहु किरदार सबकी अपनी अपनी, आज कोई नहीं लघु, लहू से अपनी सींच कर पुरुषों को जीना सिखाती, वो ही हमे अक्षर–बोध कराती, क्या हरसहु और क्या दीर्घहु

आसमां पर पहरा चांद सा हंसी चेहरा
ऐ सितमगर सितम ना कर इतना देख
उस पर दाग है कितना गहरा ।

जिनेन्द्र साधना पूर्ण

काव्य कानन सेतु

– किशनलाल जांगिड़, जोधपुर (राज.)

आध्यात्मिक गुरु प्रेरणा आदिनाथ। आचार्य आचरण अद्भुत पार्श्वनाथ। संत
संकल्प सहज वीतरागीव्यवहार। शिरोमणि शिखरस्थ शीतल संस्कार।
चिन्तनमणि तीर्थंकर मन श्रीमहावीर। पारसमणि बने थे तप से जैनधर्मवीर
विद्यासागरजी विश्व विलक्षणविभूति। विराट स्वरूप चौबीस तीर्थंकर स्तुति।
द्योतक पावन साधना सतत संस्तुति। सागर से गहरे मनीषी मनुज सुमंगल।
गगन में गूँजे विद्यासागरजी शुभनाम। रहेंगे सदा आप साधक के हृदयधाम।
जीवनधन्य जीवनदर्शन जगत प्रेरणा। महाराज महामन्त्र श्रद्धाबुद्धि धारणा।
हार्दिकभाव श्रद्धेय निर्वाण श्री वन्दना। राष्ट्रीय संत पद विभूषित जैन कामना।
जय जय जिनेन्द्र जय विद्यासागर जी।

आचार्य श्री विद्या सागर जी

काव्य कानन सेतु

– कुंजी लाल चक्रवर्ती जबलपुर(म. प्र.)

निकले हीरा आज हमारे, वेश दिगम्बर धारे।
वेश दिगम्बर धारे मुनिवर, थे जन–जन के प्यारे।।
धन्य ग्राम सदलगा हो गयी, जहाँ अवतरे स्वामी
प्रखर पूर्णिमा शरद कलाएँ,सत चित्त– वृत्त अनुगामी
सत चित आनंद डूबे रहते , छिन–पल साँझ–सकारे।।
पिता मलप्पा, श्री मति माता, के नैनों के तारे,
दस ही बरस हुई आयु तो, त्यक्त भोग हुए सारे।
बालापन से योग साधना के प्रति चित्त उघारे।।
विद्याधर से विद्या सागर, हो गए लाल हमारे
जीवन कैसा होगा, इसके मिलने लगे इशारे।।
राज महल के चार भाई जो सबै ही मुनि पद धारे। थीं दोई माता जी,
अब घर कौन सम्हारे भाई–बहन अउ जीव जंतु के, व्याकुल मन भे सारे।।
निकले हीरा आज हमारे, वेश दिगम्बर धारे।।

निद्रा भी कैसी प्यारी है,
जो घोर दुख के समय भी मनुष्य को सही सुख देती है।
- जयशंकर प्रसाद

अमर हुए विद्यासागर

काव्य कानन सेतु

– डॉ.कैलाश मण्डेला, शाहपुरा राजस्थान

श्रीमति श्री मलप्पा जी के, गृह में योग बना आकर।
आश्विन शुक्ला शरद पूर्णिमा, जन्मा चन्द्र चमक लेकर।
हुआ सदलगा में उजास नव, उजियारा जग में छाया।
महावीर के अनुज बन गए। तेज पुंज बन विद्याधर ।। १ ।।
तीस जून अड़सठ के सन में, आया इक दिन शुभ अवसर।
ज्ञान के सागर गुरुवर मिल गए, दीक्षा दी सिर पर कर धर।
जन्मा योगी पुरुष इसी दिन, शुक्ल पंचमी आषाढी।
ज्ञानी गुरु को गुणी मिल गया, शिष्य रूप विद्यासागर ।। २ ।।
सम्यक संबंधों के क्षण में, सुप्त बीज हो गए अमर।
गुरु के ज्ञान समाहित विद्या,मानस में जागी भीतर।
वर्ण हो गए आत्मवर्ण से, अनुभव एकाकार हुआ।
गुरुवर कृपा प्रसाद प्राप्त कर, ज्ञानवान विद्यासागर ।। ३ ।।
चले सत्य का अमृत भरने, लेकर के अपनी गागर।
प्यास बुझाने के उपक्रम में, गुरुवर श्रेष्ठ ज्ञान सागर।
बूंद–बूंद को संचित करते, वंचित ना रह पाए वो।
सम्पूरित घट हुआ बन गए, विद्याधर विद्यासागर ।। ४ ।।
जगत गगन पर बन कर मेघा, छाए बांहे फैला कर।
कृपा नीर की अविरल धारा, बरसाई बन करुणाकर।
भीग गए भर तृप्ति हृदय में, कोटि–कोटि जन वचनों से।
हर जीवन हरियाली भरते। हरषाए विद्यासागर ।। ५ ।।
रचे काव्य के ग्रंथ अनेकों, आए शारद सुत बन कर।
भक्ति शांति अध्यात्म चेतना, जिन–स्तुति काव्य कोष को भर।
ज्ञानपीठ चढ़ लगी बोलने, रचना बनी मूकमाटी,
विविध विषय पर करी सर्जना, विद्वत कवि विद्यासागर ।। ६ ।।

परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है,
स्थिर होना मृत्यु है, निश्चेष्ट शांति मरण है।
- जयशंकर प्रसाद

डूबो मत लो लगाओ डुबकी, कुंदकुंद कुन्दन धर कर।
तोता बन क्यों रोता है मन, नर्म नर्मदा का कंकर।
श्रमण निरंजन' शारद स्तुति कर, भावों में भर शतक रचे।
स्तोत्र और स्तुति उपदेशों के, ग्रंथकार विद्यासागर ।। ७।।
कन्नड, बंगला, अंग्रेजी, हिन्दी भाषा के विद्व प्रखर।
आप्त मिमांसा रमण मंजुषा, भक्ति संहिता के आकर।
जैन धर्म के दिशा बोध हित, रचे अनेकों ग्रंथ यहां,
महाकाव्य मूकमाटी लिख, अमर हुए विद्यासागर ।। ८ ।।
सत्य अहिंसा अपरिग्रह, अस्तेय ब्रह्मचर्या को धर।
पंच महाव्रत धारित करके, महावीर पथ पर चल कर।
निज तप से संतप्त जनों को, आनंदित करते रहते।
यश गाथाएं अधर–अधर पर, पूजनीय विद्यासागर ।। ९ ।।
हिमगिरि सा विस्तार सोच में, गहन भाव ज्यूं रत्नाकर।
धरती जिनकी सेज बन गई, अम्बर की ओढ़े चादर।
तम की शुचिता से जिनका तन, सुंदन सा प्रतिपल दमके।
अपरिग्रह की समिधा लेकर, यज्ञ करे विद्यासागर ।। १० ।।
छलक रहा जिनकी वाणी में, शब्दों का अमृत निर्झर।
सत्यं शिवम् सुंदरं प्रकटे, बने स्वयं सम्मेद शिखर।
खोल दिए वातायन सुख के, मन में सुखद समीर बही।
सरस वचन से जन–गण–मन में, विस्तारित विद्यासागर ।। ११ ।।
संत शिरोमणि सच्चे साधक, मुनि पुंगव श्री नर–नागर।
अरिहंतों, सिद्धों, आचार्यों, उपाध्यायों में साधु प्रवर।
सव्व साहूणं नमोस्तुते के, भाव बने दर्शन करके।
पंचम काल में चतुर्थ काल के, संत सिद्ध विद्यासागर ।। १२ ।।
योगी तपसी चिंतक साधक, शास्त्र सिद्ध ऋषि संत प्रवर।
महावीर पंथ अनुगामी, जिनका हर क्षण परहित पर।
यति समान जीवन है जिनका, अविचल दैहिक कष्टों में।
दुर्गम को भी सुगम बना दे, युग विभूति विद्यासागर ।। १३ ।।
जो आया वह जाएगा ही, देह बनी सबकी नश्वर।
यश गाथा जिनकी जग गाए, याद रखेंगे मन्वन्तर।
भाव जगे कवि मण्डेला मन, शब्द तभी साकार हुए।
सुकृत्यों से जीते जी ही, अमर हुए विद्यासागर।। १४ ।।

क्षमा पर केवल मनुष्य का अधिकार है,
वह हमें पशु के पास नहीं मिलती।
- जयशंकर प्रसाद

जय गुरुवर

काव्य कानन सेतु

– प्रमोद दाहिया सिहोरा, (जबलपुर)म.प्र.

जग–रोशन करने वाली वो, ज्योति कहाँ से लाएँगे।
मोक्ष–मार्ग गामी गुरुवर को, कहाँ ढूँढ़ने जाएँगे।।
त्याग और तप की मूरत थे, भरते थे खाली गागर।
ज्ञान–गुणों की खान आप थे, परमपूज्य विद्यासागर।।
ज्ञानामृत रस पीने वाले, कैसे धीर बंधाएँगे।
मोक्ष–मार्ग गामी गुरुवर को, कहाँ ढूँढ़ने जाएँगे।।
सत्य–अहिंसा आप बताए, शाकाहार नियम संयम।
महाव्रत धारण करने वाले,रुके नहीं बढ़ गए कदम।।
आपके ज्ञानमार्ग को कैसे, दुनियाँ वाले भुलाएँगे।
मोक्ष–मार्ग गामी गुरुवर को, कहाँ ढूँढ़ने जाएँगे।।
जीवन के सब सुख त्यागे थे, ज्ञान–मार्ग अपनाए थे।
जीव–जगत के दुख हरने को,आप धरा में आए थे।।
सत्य–राह पर चलने की हम, सीखों को अपनाएँगे।
मोक्ष–मार्ग गामी गुरुवर को, कहाँ ढूँढ़ने जाएँगे।।
दूर सदा ही रहा आपसे, धन– माया का ये बंधन।
ओम नमो अरिहंताणं ये, गाते हैं घर–घर जन–जन।।
गुरुवर पथरीली राहों से, आप ही हमें बचाएँगे।
मोक्ष–मार्गगामी गुरुवर को, कहाँ ढूँढ़ने जाएँगे।।
नंगे पग विचरण करते, देखे नहीं पाँव के छाले।
पिच्छी–कमंडल छोड़ चले हैं,मौन हुए हैं जग वाले।।
अटकी नाँव प्रमोद भँवर में, गुरुवर पार लगाएँगे।
मोक्ष–मार्ग गामी गुरुवर को, कहाँ ढूँढ़ने जाएँगे।।

बुद्ध कहते हैं कि अतीत पर ध्यान मत दो,
भविष्य के बारे में मत सोचो,
अपने मन को वर्तमान क्षण पर केन्द्रित करो।

विद्या सागर मुनिराज

काव्य कानन सेतु

– विभा जैन `ओज्स`, इन्दौर

आचार्य विद्यासागर मुनिराज महाराज।
हृदय कमल विराजो आप।
हमें छोड़ कहाँ चले, भक्त गण पुकारें आज।
जग सूना कर गए आप, नैना ढूँढे आज।।
विद्या सागर मुनिराज, विद्या के ,
ज्ञान दिवाकर तीनों युग करें प्रणाम।
सत्य अहिंसा परमो धर्म का किया अनुपालन,
जैन तीर्थो की स्थापना कर बनाए अनेक धाम।।
दिगम्बरत्व को धारण कर बतलाया, जग में त्याग धर्म है महान।
हो कलयुग के तीर्थंकर तुम, महावीर समान।।
बढ़ाई विश्व में जैन धर्म की आन–बान और शान।
जियो और जीने दो, यही है जैनों का मूल मंत्र प्रधान।।
जीवन है अनमोल, भक्ति का न कोई मोल।
जैनम जयतु शासनम, भक्ति भावना से तो तू बोल।।
गुरुवर मोक्ष मार्ग पर होकर आरूढ,
चल पडे हैं मोक्ष महल की ओर।
अंतिम सत्य तू मान रे बन्दे।
आत्मा का हुआ परमात्मा से मिलन,
जयकारे गूँजे हैं चहुँ ओर।।
चल पडा है ले कर डोला विद्याधर को आज।
ज्ञानामृत वाणी हुई है आज मूक,
हुआ हृदय द्रवित सम्पूर्ण समाज।।
अम्बर से अवनी तक फैला है दिगम्बरत्व का साम्राज्य।
सूर्य नारायण बन किया आलोकित,
अज्ञान रूपी तम का हरा राज्य।।
लेकर आना अवतार, हर माँ आस लगाए।
जैन धर्म की पताका, अनंतानंत काल तक विश्व में लहराए ।।

हजारों खोखले शब्दों से अच्छा वह एक शब्द है,
जो शांति लाये।

- महात्मा बुद्ध

प्रेम दिवस की शुभकामनाएँ एवं बधाई

प्रसंग सेतु

– बेधड़क गोला खीरी यूपी

(कुंडलियां)

लीजै फूल गुलाब का, करो मित्र इकरार।
दिलों–दिलों को पासकर,करियेगा इजहार।।
करियेगा इकरार, मिटा नफरत की रेखा।
बाँहु पास में बाँध,अपन तू प्यार सुरेखा।।
कहें बैधड़क बंधु , बसंती रंग रंग दीजै।
प्रेम प्यार मनुहार, मित्र दिल में धरि लीजै।।

(हुंडलियाँ)

अंग –अंग घायल हुए , देख बसंती सारि।
घट लेकर पनघट चली,एकअलबेली नारि।।
एक अलबेली नारि, चले पग पैजनि बाजे।
अंग –अंग उत्पात, नाक नथ–नथनी साजे।।
कहें बेधड़क बंधु,कमरिया लचकति जाती।
सरसौं फूली खेत , बसंती रंग उडाती।।

जब हम क्रोधित होते हैं तो सच का मार्ग छोड़ देते हैं।

- महात्मा बुद्ध

बसंतोत्सव (बसंत पर कुंडलियां)

प्रसंग सेतु

– प्रो.(डॉ)शरद नारायण खरे
प्राचार्य शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय मंडला(मप्र)

मौसम मदमाने लगा, शोभन लगे बसंत।
मधुमासी परिवेश ने, किया विरह का अंत।।
किया विरह का अंत, आज तो चंचल मन है।
खुद़ से ही है दूर, आज खुद़ का ही तन है।।
अमराई में कूक, फुर्र तो है अब सब गम़।
खिलने लगा पलाश, बहुत ही भाता मौसम।।
सुखद शीतमय है हवा, शोभन लगे बसंत।
प्रेमिल अब मौसम हुआ,तोड़ रहे तप संत।।
तोड़ रहे तप संत,मिलन की ही सब बातें।
दिन में प्रिय की याद,लग रहीं सूनी रातें।।
लगे गुलाबी ठंड,ताप से काया दहकी।
हर कोई मदमस्त,सभी की गति है बहकी।।
पलता है आनंद अब,शोभन लगे बसंत।
ढूंढ रहीं अंखियां व्यथित,कहां गए हैं कंत।।
कहां गए हैं कंत,मिलन हो जाए चोखा।
जाने कोई हाल, देखा गया यह दिल धोखा।।
है वियोग की मार,बसंती मौसम खलता।
व्याकुल है अनुराग,हृदय में प्रियवर पलता।।

जिनकी संगत में खामोश संवाद होते हैं,
अक्सर वो रिश्ते बहुत खास होते हैं।
- ओशो

फूलों का वजन

लघु कथा सेतु

– मीरा जैन, उज्जैन

मां–मां! इतने सालों में पहली बार आपको इतना खुश देख रहा हूं, वह भी जब आज वैलेंटाइन डे पर आपके पूरे गुलाब बिके ही नहीं, ऊपर से यह मिठाई भी लेकर आई, अचानक कोई लॉटरी लग गई है क्या मां?'

कमली ने प्यार से गुल्लू के सिर पर हाथ फ्फेरते हुए कहा, 'हां बेटा! यही समझ ले कि आज मेरी लॉटरी लग गई है. यह लो मिठाई, ज्ञान की देवी मां सरस्वती को इसका भोग लगा कर तुम भी खाओ और आसपास के बच्चों में भी इसे बांट दो.'

आश्चर्यजनक मुद्रा में गुल्लू ने कहा, 'पर मां! मुझे एक बात तो बताओ, ऐसी कौन सी लॉटरी लग गई है आपकी, मैं भी तो जानूं?'

'बेटा, आज बसंत पंचमी है, मां सरस्वती का जन्मदिन. आज मैंने फ्फूलों की थोक मंडी से डरते–डरते लाल गुलाब के साथ ढेर सारे पीले फूल भी खरीद लिए थे. लेकिन डर केवल भ्रम निकला क्योंकि देखते ही देखते पीले फूल हाथों–हाथ बिक गए और दिन भर में ये लाल गुलाब आधे भी नहीं बिके. मुझे खुशी इस बात की है बेटा कि आज भी हमारी संस्कृति जिंदा है और वह वैलेंटाइन डे पर बहुत भारी है.

एक निर्दोष के प्राण बचाने वाला असत्य,
उसकी अहिंसा का कारण बनने वाले सत्य से श्रेष्ठ होता है।
- महादेवी वर्मा

अच्छाई की बड़ी लकीर खींचना ही सर्वोत्तम मार्ग

– गोपाल प्रभाकर, जयपुर

अच्छाई और बुराई के बीच सतत संघर्ष चल रहा है।ये संघर्ष सकारात्मक पहल बिना समाप्त नहीं हो सकता। बुराई को दूर करने के लिए अच्छाई की बड़ी लकीर खींचना ही सर्वोत्तम उपाय है । बुराई से बुराई को समाप्त नहीं किया जा सकता।वैर को वैर से शांत नहीं किया जा सकता । वैसे नकारात्मक वृत्ति से नकारात्मक विचारों का शमन नहीं हो सकता। क्रोध से क्रोध को, नफ़रत से नफ़रत को और हिंसा से हिंसा को हरगिज़ मिटाया नहीं जा सकता। प्रेम, शांति और अहिंसा से ही जीवन को शांत, सफल और सार्थक बनाया जा सकता है।महात्मा गांधी कहा करते थे कि कोई असत्य से सत्य को नहीं पा सकता। सत्य को पाने के लिए सत्य का आचरण करना होगा। बापू सदा साधनों की शुद्धता पर बल दिया करते थे। ये दुनिया गुणावगुण का मिश्रण है। कोई भी केवल गुणों से भरपूर नहीं तो कोई भी केवल दोषों से परिपूर्ण नहीं। हर व्यक्ति की अपनी विशेषता होती है और हर व्यक्ति की अपनी कमियां होती है। यदि हम पूर्णतः निर्दोष इंसान तलाश करेंगे तो शायद ही मिल पाएगा। दोषमुक्त तो सिर्फ़ सर्वशक्तिमान यानी ईश्वर ही हो सकता है। समाज से बुराई दूर करने का एक मात्र सही उपाय है,आत्म निरीक्षण।ये नीति सम्मत दोहा हमें सही दिशा देता है : बुरा जो देखन में चला, बुरा न मिलया कोय। जो दिल खोजा आपना मुझ सा बुरा न कोय। संस्कृत में एक बहुत प्यारी सूक्ति है। कोई अक्षर अमंत्र नहीं,कोई पौधा औषधिविहीन नहीं,कोई व्यक्ति अनुपयोगी नहीं।यानी विश्व में जो कुछ भी है,उपयोगी है। अतुलनीय है क्योंकि विश्व नियंता ने प्रत्येक पदार्थ और प्राणी को सोच समझ कर ही निर्मित किया है। इसलिए इस वैविध्यमय जगत में किसी का किसी से मुक़ाबला नहीं हो सकता। किसी की किसी से कोई तुलना नहीं हो सकती। कीर्तिशेष कवि कुल किरीट कमलाकर की पंक्तियां ध्यान में आजाती है : जो भी ज़ाहिर जमाल है प्यारे, सब उसी का कमाल है प्यारे, किसका किससे मुकाबला कीजै हर कोई बेमिसाल है प्यारे।

जिस प्रकार बिना जल के धान नहीं उगता,
उसी प्रकार बिना विनय के प्राप्त की विद्या फलदाई नहीं होती।
- भगवान महावीर

इतिहास के झरोखे से

इतिहास सेतु

एक था गुल मुहम्मद....

जब रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से अंतिम युद्ध लड़ते हुए घायल हो गई और अंग्रेज उनका पीछा कर रहे थे, तब एक अंग्रेज ने गोली चलाई, जो रानी लक्ष्मीबाई की बाई जंघा में लगी।

इस समय रानी के दोनों हाथों में तलवारें थीं, लेकिन गोली लगने के बाद जब सम्भलना मुश्किल हुआ, तो उन्होंने बाएं हाथ की तलवार फेंक दी और लगाम पकड़ी।

गोली चलाने वाले अंग्रेज को रानी ने दाएं हाथ की तलवार से समाप्त किया। इसी समय एक और अंग्रेज ने तलवार से रानी लक्ष्मीबाई के सिर पर प्रहार किया, जिससे रानी के सिर का एक हिस्सा कट गया और दाई आंख बाहर आ गई।

ऐसी परिस्थिति में भी रानी ने उस अंग्रेज का कंधा काट दिया। तब तक रानी के साथी गुल मुहम्मद भी आ पहुंचे। गुल मुहम्मद ने उस अंग्रेज के २ टुकड़े कर दिए।

फिर रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुई और उनके अंतिम संस्कार के समय वहां गुल मुहम्मद, रघुनाथ, देशमुख व बालक दामोदरराव थे।

रानी लक्ष्मीबाई के अंतिम समय का ये वर्णन वृंदावनलाल वर्मा ने किया है। वृंदावनलाल वर्मा के परदादा झांसी के दीवान आनंदराय थे, जिन्होंने रानी लक्ष्मीबाई का साथ देते हुए वीरगति पाई। इस अंतिम समय के बारे में वृंदावनलाल को उनकी परदादी ने बताया, उस समय वृंदावनलाल की आयु १० वर्ष थी।

(फोटो झांसी दुर्ग का है) साभार – अजीज हबीब

शरीर को रोगी और निर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।

- हरिऔध

अनोखा आयोजन

– नितिन सोनी

विचार सेतु

एकतरफ जहाँ आजकल के युवा प्रीवेडिंग शूट के नाम पर जंगलो और पहाड़ियों की ख़ाक छनते फिरते है धर्म, समाज, परिवार की इज्जत को मटियामेल करने में कसर नहीं छोड़ते ! वही अंबानी परिवार नें एक अलग ही मिसाल पेश की है ...
भारत के सबसे धनाढ्य परिवार अपने बेटे की प्रीवैडिंग सेरेमनी करने गुजरात के एक गाँव में आया और जहाँ पूरा परिवार अपने हाथों से भोजन परोसते दिखा चाहे खुद अंबानी हो या उनके पुत्र पुत्रवधू हो....
कुछ ज्ञानी इसे शौ ऑफ या पब्लिसिटी के लिए किया गया चोचला भी बता रहे है अरे भाई इस धनाढ्य परिवार को क्या जरूरत शौ ऑफ करने की इनका तो घर से निकलना ही खबर बन जाती है फिर क्यों ये इतनी जहमत करेंगे की हाथ जोड़कर भोजन परोसते फिरेंगे... ?
पर ऐसा नहीं है ये संस्कार है जो धीरूभाई नें अपने बच्चों को और उनके बच्चों नें अपने बेटे बेटियों को दिए जिसके चलते अपार दौलत होने के बावजूद अपने धर्म, संस्कृति को नहीं भूले जमीन नहीं छोडी और बड़ी ही शालीनता से अपने विवाह की शुरुवात की...
आजकल के कूल ड्यूड्स और उनकी अतिआधुनिक फेमेलीस को ये सब देखकर अपनी सोच में जरूर बदलाव लाना चाहिए, बात सिर्फ पैसे खर्च करने या न करने की नहीं बात संस्कार और संस्कृति की है। आपके पास धन दौलत है खूब लुटाइये, हर माँ बाप अपने बच्चों की शादी के लिए फंड जोड़ते है अपने शौक पूरे करना चाहिए, शादी समारोह में मौज मस्ती अपनी जगह है पर उसके साथ साथ हमें यह भी तो देखना होगा की क्या हम रितिरिवाज के नाम पर अपनी संस्कृति और संस्कार को धूमिल तो नहीं कर रहे ,..

तप ही परम कल्याण का साधन है,
दूसरे सारे सुख तो अज्ञान मात्र हैं।
- बाल्मीकि

सोचना होगा कि –
क्या वाकई में हम रस्मो को तोड़ मरोड़ तो नहीं रहे !
क्या वाकई हमारा धर्म और हमारे संस्कार य ऐसा करने को प्रेरणा देते है !
बहुत सी बातें है जहाँ दोनों परिवारों को बैठकर समझना चाहिए और फूहड़ता और दिखावे से दूरी बनाना चाहिए...
आजकल देखने में आ रहा है कि कई परिवार महिला संगीत से हटकर भजन संध्या का आयोजन रख रहे है जिस शादी के कार्यक्रम कि शरुवात ही श्री गणेश जी अव्हाहान से होती है उसमे भक्तिमय भजन संध्या का होना एक अलग ही सुकून देता है याद रहे यही हमारे संस्कार है यही हमारी संस्कृति है....
बाकी तो शादी कैसे करना, उसमे क्या करना ये बेहद ही व्यक्तिगत मामला है इसमें अपनी राय जबरजस्ती घुसाना गलत ही होगा....

रामायण समस्त मनुष्य जाति को अनिवर्चनीय सुख और शांति पहुंचाने का साधन है।
- मदनमोहन मालवीय

पुण्य - स्मरण रविन्द्र जैन

– दीपाली अग्रवाल

देह के कितने यत्न हैं कितने मुनव्वल हैं इन इन्द्रियों के। कि बिना आँख ना सूरज का उगना दिखे ना फूलों के रंग। क्या किसी संगीतज्ञ को संतुष्टि हो सकेगी, कि वह बिना देखे उस काले–सफेद 'की' वाले हारमोनियम को बजा सकता है। वही संगीतज्ञ अगर गायक भी हुआ तो सिर्फ़ छू ही भर सकेगा ना वह माइक जिस पर रिकॉर्ड की जानी है उसकी आवाज। तिस पर वह लेखक भी हुआ तो क्या सदैव रखेगा अपनी सबसे ऊपर की जेब में एक पेन और डायरी। अगर लकीरें टेढ़ी हुई तो कौन समझ पाएगा उसकी लिखाई।

मैं सोचती हूँ कि देह के इन्हीं तमाम यत्नों में से वह कौन सी ऊर्जा थी कि रवीन्द्र जैन तीनों ही भूमिका बखूबी निभा ले गए। वे अलीगढ़ से निकलकर कोलकाता और मुंबई तक पहुँचे अपने फन की रौशनी के सहारे। आज उनकी जन्मतिथि है। लेकिन जितने लोगों से उनका जिक्र हुआ वे बोले कि – कौन रवीन्द्र जैन? यह सवाल सुनकर लगा कि कितना कम सुना हमने। क्या रामायण नहीं देखी या विवाह, चोर मचाए शोर, अँखियों के झरोखों से सरीखी फ़िल्में नहीं देखीं या उनके गीत नहीं सुने।

रामानन्द सागर की रामायण में जिस आवाज़ ने किरदारों के लिए गीत गाए वह रवीन्द्र जैन हैं। जिस बोल ने बताया कि राम की गंगा मैली हो गयी है वह रवीन्द्र जैन हैं। जिस संगीत को नदिया के पार में सुना वह रवीन्द्र जैन का है। वह रवीन्द्र जैन जिन्हें २०१५ में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

लोहा गरम भले ही हो जाए पर
हथौड़ा ठंडा रहकर ही काम करता है।
- सरदार पटेल

अलीगढ़ की पैदाइश रवीन्द्र बचपन से ही नेत्रहीन थे लेकिन संगीत में रुचि थी जिसे देखते हुए पिता ने उनका संगीत के विद्यालय में दाखिला करवा दिया। उसके बाद उनकी सुर–यात्रा शुरु हो गयी। रामायण में भरत से लेकर लव–कुश तक सभी किरदारों के लिए उन्होंने गाने गाए। वे ऐसे हिट हुए कि रामायण के साथ रवीन्द्र जैन की आवाज़ सदा के लिए चस्पा हो गयी। इस कदर की उनकी आवाज़ अब पात्रों के दृश्य बनाती है।

मुझे याद है कि बचपन में मथुरा के विश्राम घाट किनारे बनी दुकानों पर जब सुनाई देता कि 'देखो कालिया के फ़न पर नाचत कन्हैया' तो सामने बहती यमुना में वह दृश्य दिखाई देने लगता। उनकी आवाज़ तब से मन में एक कोना पकड़े हुए है। अलग और बेहद मधुर कि जो गाने उन्होंने गाए हैं वह आप तुरंत पहचान लेंगे। चाहें वह चौपाई हों या गीता का उपदेश देते कृष्ण का गान हो। जितनी श्रद्धा से उन्होंने भक्तिमय नग्मे गाए उतनी ही लगन से फ़िल्में गानों में न सिर्फ़ संगीत दिया बल्कि लेखन भी किया। यूट्यूब पर खोजिए– रवीन्द्र जैन के गाने और आप कहेंगे कि इतने बड़े–बड़े हिट उन्होंने दिए हैं।

संगीत से ध्यान भंग न हो इसलिए उन्होंने ताउम्र अपनी आँखों का इलाज भी नहीं करवाया। आज उनकी जन्मतिथि के दिन उन्हें बेहद कम याद किया जाएगा। शायद ही कहीं वह नजर आएं। वह भले आजीवन न देख पाए लेकिन हमने उनके बोल 'गुनगुनाए' हैं, संगीत 'सुना' है, उनकी धुन पर रोमांचित हुए हैं। भक्ति और संगीत के कितने रूप तो उन्होंने हमें 'दिखाए' हैं।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.राजकुमार तिवारी सुमित्र का निधन

जबलपुर के प्रतिष्ठित साहित्यकार, लगभग ४० कृतियों के रचयिता, पाथेय साहित्य कला अकादमी के संस्थापक कविवर डॉ. राजकुमार तिवारी सुमित्र का आज दिनांक २७ फरवरी २०२४ को रात्रि १० बजे ८५ वर्ष की उम्र में निधन हो गया।डॉ.सुमित्र ने अनेक समाचार पत्रों में सम्पादकीय सेवाएं दी ।आप प्रदेश ही नहीं देश की साहित्यिक धारा के संवाहक रहे। लगभग ६ दशक उन्होंने साहित्य की अप्रतिम सेवा की। श्रद्धा सेतु समूह की ओर से सभी स्वर्गस्थ आत्माओं को विनम्र श्रद्धांजलि।

फल की अभिलाषा को छोड़कर कर्म करने वाला मनुष्य ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

- गीता

शोक समाचार

अमीन सयानी नहीं रहे

आवाज की दुनियां के जादूगर अमीन सयानी का २० फरवरी को मुम्बई में निधन हो गया,वे ९१ वर्ष के थे। रेडियो पर अमीन सयानी का जादू लोगों के सर चढ़कर बोलता था। उनका कार्यक्रम बिनाका गीतमाला लोकप्रियता के चरम पर था।

शिवराम छंगाणी दिवंगत

राजस्थानी भाषा अकादमी के पूर्व अध्यक्ष शिवराम छंगाणी का २२ फरवरी को ८६ वर्ष की आयु में बीकानेर में निधन हो गया। उन्होंने ५० से अधिक पुस्तकों की रचना की जिसमें उनियारा, ओलखान और संभाल थारो कवि करम जैसी राजस्थानी भाषा की कृतियां शामिल हैं। वे अपने पीछे पत्नी,दो पुत्र व तीन पुत्रियों सहित भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

सुरेश जैन 'सरल' स्वर्गस्थ

जैन जगत के वरिष्ठ साहित्यकार,कुशल लेखनी के शब्द साधक गुरुजनों की जीवनी लेखन में सिद्धहस्त श्री सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर का २२ फरवरी को समाधिपूर्वक मरण हो गया। उन्होंने सात प्रतिमा के व्रतों को बुद्धि पूर्वक स्वीकार कर लिया था।

लस्या नंदिता का निधन

तेलंगाना की बी आर एस विधायक लस्या नंदिता का २३ फरवरी को सड़क हादसे में निधन हो गया,वे ३७ वर्ष की थीं।

कलाकार के पास हृदय का यौवन होना चाहिए,
जिसे धरती पर उड़ेलकर उसे जीवन की कुरूपता को सुंदर बना सके।
- सुमित्रानंदन पंत

प्रबंध संपादक की कलम से

प्रबंध सेतु

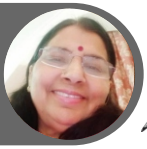

– शोभा टण्डन, जोधपुर

चांद की सतह को छू कर अभी हम उतरे हैं ,रोजी रोटी और परिवार जीवन संघर्ष से अलग हमारी हथेली पर रखा चांद तक लम्बा एक वास्तविक सा फासला है। मेरी झोंपडी में राम आयेंगे से गूंजता हमारे आस –पास बिखरा यह गगन,यह आंगन, लम्बी –लम्बी एलीवेटेड सडक़ों, रेल और हवाई रास्तों में खोया गगन चुम्बी इमारतों से झांकता एक भारत रसोई के धुंए में दाल रोटी के निवालों के बीच भी अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को सहेजने में कामयाब रहा है। शिक्षा–दीक्षा,खेल और सैन्य अलंकरणों के बीच हम सोचते हैं ,एक संवाद पैदा करते हैं और कुछ न कुछ लिखते रहते हैं।

कुछ लोग घरेलू उद्योग में अपनी अंगुलियां रंगते हैं तो कुछ लोग विशाल उद्योगों में अपने मस्तिष्क को खपाते हैं।

अखबार, टीवी और दादा–दादी की कहानियों को सुनते– सुनते हमारे हाथ से कलम और मन की उडानों को मेंहदियां उकेरी सी रचनाएं कागज़ों पर उतरने को तिलमिलाती हैं।

तारावती सैनी नीरज भारतीय लेखिका ने दस शब्दों में दुनियां की सबसे छोटी कहानी ...(०५ मार्च २०२४... राजस्थान पत्रिका) लिखकर दुनियां को आश्चर्य में डाल दिया।

लेखन अभिव्यक्ति का सबसे प्रबल और सरल माध्यम है,जिसे जयपुर के पारिवारिक पत्रकार डा. अखिल बंसल जी ने दक्ष लेखकों, समीक्षकों के सानिध्य में समन्वय वाणी फाऊंडेशन के माध्यम से अथाई समन्वय समूह की स्थापना की और इसमें नये रचनाकारों को अंकुरित और सजग लेखन , प्रोत्साहन हेतु मार्ग प्रशस्त किया।

जर्नलिस्ट डा. अखिल बंसल जी ने अथाई को एक प्रबल संवाद के रूप में प्रस्तुत किया। हम सबके के प्रेरणास्रोत परमश्रृद्धेय आदरणीय प्रधान सम्पादक जर्नलिस्ट डा. अखिल बंसल जी का बहुत– बहुत साधुवाद, हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं। आपका आशीर्वाद हम सब पर सदैव बना रहे और आपके मार्गदर्शन में अथाई दिनों –दिन नित नयी सफलता को चूमे।

यथार्थ का दर्पण जिस प्रकार जगत की बाह्य परिस्थितियां हैं, उसी प्रकार आदर्श का दर्पण मनुष्य के भीतर का सच है।

- सुमित्रानंदन पंत

अखिल सेतु त्रैमासिकी का यह अंक आपको अवश्य पसंद आया होगा। क्या आप अपने परिजनों और मित्रों को इस सुखद अनुभूति में शामिल नहीं करना चाहेंगे ?
आनंद तो बांटने से ही बढ़ता है ।
आपका सहयोग ही हमारी सफलता है और पत्रिका का प्रचार प्रसार का यही आधार है। "अखिल सेतु" का यह अंक आपको कैसा लगा,इसे और अधिक सुरुचिपूर्ण बनाने की दिशा में आपके विचारों व सुझावों का स्वागत है।

कृपया Forward अवश्य करें

इसे स्वावलंबी बनाने आर्थिक सहयोग दें

9929655786 (केवल संदेश हेतु)

दुख और वेदना के अथाह सागर वाले
इस संसार में प्रेम की अत्यधिक आवश्यकता है।
- जयशंकर प्रसाद